8 माखनलाल चतुर्वेदी

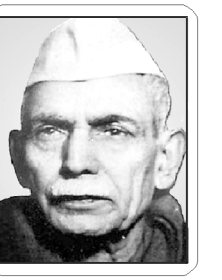

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, सन् 1889 ई० में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में 'बावई' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बँगला, गुजराती, अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन-कार्य भी किया। सन् 1913 ई० में ये सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हुए। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। इन्हें कई बार जेल-यात्रा करनी पड़ी। ये सन् 1943 ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए। सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी० लिट् की उपाधि तथा भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। अपनी कविताओं द्वारा नवजागरण और क्रान्ति का शंख फूँकनेवाले कलम के इस सिपाही का 30 जनवरी, सन् 1968 ई० को स्वर्गवास हो गया।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–4 अप्रैल, सन् 1889 ई०।
- **जन्म-स्थान**–बावई (होशंगाबाद), म० प्र०।
- **पिता**–पं० नन्दलाल चतुर्वेदी।
- **मृत्यु**–30 जनवरी, सन् 1968 ई०।
- **सम्पादन**-प्रभा, कर्मवीर (पत्र)।
- **शिक्षा**-प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् घर पर ही अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, गुजराती भाषा का अध्ययन।
- **प्रमुख रचनाएँ**-रामनवमी, समर्पण, माता, युगचरण, साहित्य-देवता, हिमतरंगिणी, वेणु लो गूंजे धरा।
- **भाषा**-सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली।
- **शैली**-मुक्तक, ओजपूर्ण, भावात्मक।

चतुर्वेदीजी के रचना-संग्रह इस प्रकार हैं—**हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा।** इनके अतिरिक्त चतुर्वेदीजी ने नाटक, कहानी, निबन्ध, संस्मरण भी लिखे हैं। इनके भाषणों के '**चिन्तक की लाचारी**' तथा '**आत्म-दीक्षा**' नामक संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। चतुर्वेदीजी की प्रसिद्धि कवि के रूप में ही अधिक है, किन्तु ये एक पत्रकार, समर्थ निबन्धकार और सिद्धहस्त सम्पादक भी थे। इनकी गद्य-काव्य की अमर कृति '**साहित्य देवता**' भावात्मक निबन्धों का संग्रह है। '**क्रान्तिक की लाचारी**' और '**आत्मदीक्षा**' में चतुर्वेदी जी के ओजस्वी और विचारशील भाषण संग्रहीत हैं। इन्होंने '**नागार्जुन**' नाटक की रचना की है, साथ ही '**कर्मवीर**' और '**कला का अनुवाद**' दो कहानी संग्रह भी इनके हैं।

इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयतावादी है, जिसमें त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य-भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देनेवालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरुष की हुंकार और कहीं करुणा से भरी मनुहार है। इनकी रचनाओं की प्रवृत्तियाँ प्रायः स्पष्ट और निश्चित हैं। राष्ट्रीयता इनके काव्य का कलेवर है, तो भक्ति और रहस्यात्मक प्रेम इनकी रचनाओं की आत्मा। इनकी छन्द-योजना में भी नवीनता है। चतुर्वेदी जी की कविता में भाव-पक्ष की कमी को कला-पक्ष पूर्ण कर देता है। माखनलाल जी ने खण्डवा (म०प्र०) से 'कर्मवीर' साप्ताहिक पत्र भी निकाला था।

चतुर्वेदीजी की भाषा खड़ीबोली है। उसमें संस्कृत के सरल और तत्सम शब्दों के साथ फारसी के शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं भाषा भावों के साथ चलने में असमर्थ हो जाती है, जिससे भाव अस्पष्ट हो जाता है। इनकी शैली में ओज की मात्रा अधिक है। भावों की तीव्रता में कहीं-कहीं इनकी शैली दुरूह और अस्पष्ट हो गयी है।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक। **('युगचरण' से)**

जवानी

प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी!
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी?

चल रहीं घड़ियाँ,
चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ,
चले हिम-खण्ड प्यारे;
चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाये?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाये?

पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले;
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!

द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिमगिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसल कर, अपने
इरादों सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें?

रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी?

वह कली के गर्भ से फल
रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस
तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमि रुख लटका
दिये फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही
संकेत कैसे, वृक्ष-डाली!

फल दिये? या सिर दिये? तरु की कहानी
गूँथकर युग में, बताती चल जवानी।

श्वान के सिर हो
चरण तो चाटता है!
भौंक ले—क्या सिंह
को वह डाँटता है?
रोटियाँ खायीं कि
साहस खो चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से
वह जा चुका है।

तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी!

ये न मग हैं, तब
चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर
देखा-देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे
कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा
की मेख हैं ये।

प्राण रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।

टूटता-जुड़ता समय
'भूगोल' आया,
गोद में मणियाँ समेट
'खगोल' आया,
क्या जले बारूद?
हिम के प्राण पाये!
क्या मिला? जो प्रलय
के सपने न आये।
धरा? यह तरबूज
है, दो फाँक कर दे,

चढ़ा दे स्वातन्त्र्य-प्रभु पर अमर पानी!
विश्व माने—तू जवानी है, जवानी!

लाल चेहरा है नहीं
फिर लाल किसके?
लाल खून नहीं?
अरे, कंकाल किसके?
प्रेरणा सोयी कि
आटा-दाल किसके?
सिर न चढ़ पाया
कि छापा-माल किसके?

वेद की वाणी कि हो आकाशवाणी,
धूल है जो जग नहीं पायी जवानी।

विश्व है असि का?
नहीं संकल्प का है;
हर प्रलय का कोण,
काया-कल्प का है,
फूल गिरते, शूल
शिर ऊँचा लिये हैं;
रसों के अभिमान
को नीरस किये हैं!

खून हो जाये न तेरा देख, पानी!
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

('हिमकिरीटिनी' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) चाह नहीं .....वीर अनेक!

(ख) मुझे तोड़ .....वीर अनेक।

(ग) पहन ले .....उठ री जवानी!

(घ) लाल चेहरा .....छापा-माल किसके। **(2020MG)**

(ङ) विश्व है असि .....जीवन की जवानी। **(2016CG)**

(च) रक्त है? या है .....वृक्ष डाली। **(2016CD)**

2. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2017AA,AE,AF, 18HA, 20MC)**

3. माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. माखनलाल चतुर्वेदी की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।

5. 'जवानी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

6. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में फूल को किन बातों की चाह नहीं है और क्यों?

7. पुष्प को मातृभूमि के लिए शीश कटाने हेतु जानेवालों के पथ पर बिछने में क्यों आनन्द है?

8. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का सारांश लिखिए।

9. 'जवानी' कविता में कवि ने युवकों को क्या प्रेरणा दी है?
10. साहसहीन युवक को ग्राम-सिंह कहकर सम्बोधित करने में जो व्यंग्य है, उसे समझाइए।
11. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
12. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या सन्देश देने का प्रयास किया है? स्पष्ट कीजिए।
13. हास्य रस की परिभाषा देते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण दीजिए।
14. उपमा अलंकार को परिभाषित करते हुए प्रस्तुत पाठ से उदाहरण दीजिए।
15. सोरठा छन्द को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
(ii) राष्ट्रवादी कवियों की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

➨ पुष्प की अभिलाषा

सुरबाला = देवांगना, अप्सरा। **सम्राटों** = चक्रवर्ती राजाओं। **इठलाऊँ** = गर्व करूँ, इतराऊँ। **बनमाली** = माली, वनमाला धारण करनेवाला। **शव** = लाश। **चाह** = इच्छा।

➨ जवानी

विधवा = निस्तेज के लिए प्रयुक्त। **पानी** = तेज, स्वाभिमान हेतु प्रयुक्त। **चल रहीं घड़ियाँ.....लहर जाये** = सब में गति है तथा तेरी प्रगति रुक जाय, यह कैसे सम्भव है, दो शताब्दियों के बाद तेरी उमंग जागे, यह ठीक नहीं। **स्वमुण्ड सुमेरु कर ले** = अपने सिर को बलिदानी मुण्डमाला का सबसे बड़ा दाना बना ले, जीने की ममता त्याग दे। **भूमि-सा.....आज धानी** = जैसे लहलहाते हुए धानों की हरियाली में धरती का जीवन झलकता है, उसी भाँति अपनी निस्तेज उदास जवानी को जीवन दो। **एक हिमगिरि.....पृथ्वी गोल कर दें** = एक सिर के बदले में हिमालय को चूर्ण-चूर्ण कर दें। जैसे मन में इरादे उठते हैं, वैसे ही पृथ्वी को हाथों में उठा कर मसल दें। **वह कली.....सिर तान आया** = जिस प्रकार कली से फूल एवं फूल से फल बनता है, उसी प्रकार मन में उठनेवाली तेरी इच्छाएँ दृढ़ हों तथा शुभ संकल्पों का रूप धारण करके निकलें। **डालियों ने.....वृक्ष-डाली** = धरती की ओर झुके हुए वृक्षों के लटकते हुए फल जैसे किसी शुभ संकल्प हेतु सिर कटाने का संकेत दे रहे हों। **ये न मग हैं.....रेखियाँ हैं** = वीर युवक ही प्राणों की चिन्ता किये बिना नवीन पथ का निर्माण किया करते हैं। **बलि दिशा.....देखा-देखियाँ हैं** = वे दूसरे की देखा-देखी बलिदान-पथ हुआ करते हैं। **धरा तीर्थों.....मेख हैं ये** = युवकों के मार्ग धरा तीर्थ की भाँति वन्दनीय स्थान बन गये हैं। **री मरण के.....चढ़ती जवानी** = जिसका मूल्य मरण है, जो प्राणोत्सर्ग से मिलती है। **भूगोल =** भूमण्डल। **खगोल** = आकाशमण्डल। **आटा-दाल किसके** = निर्जीव होकर क्या दूसरों के द्वारा सरलता से निगल जाने योग्य खाद्य पदार्थ बन गये हो? **हर प्रलय का कोण कायाकल्प का है** = प्रत्येक प्रलय जीवन को नया मोड़ देता है। प्रत्येक क्रान्ति में नये परिवर्तन का मोड़ होता है। **मरण का त्योहार....जवानी** = जीवन रहने पर जो जोश से भरी रहती है तथा मरण जिसके लिए त्योहार जैसा प्रसन्नतादायक है। **असि** = तलवार। **कायाकल्प** = पूर्ण परिवर्तन, क्रान्ति। **अन्तर** = भीतर। **नभ** = आकाश। **हिमखण्ड** = बर्फ के टुकड़े। **नर-मुण्ड माला** = मनुष्यों के मुण्डों की माला। **सुमेरु** = माला का वह दाना जिसके पूर्व माला पूरी होती है। **भूडोल** = कम्पित। **इरादों** = संकल्प, इच्छा, विचार। **अरमान** = अभिलाषा। **अली** = सखी। **श्वान** = कुत्ता। **ग्राम सिंहों** = कुत्ता। **मग** = मार्ग। **कृति लेख** = कार्यरूपी लेख। **स्वातंत्र्य-प्रभु** = स्वतंत्रतारूपी ईश्वर। **लाल** = लाल रंग, पुत्र। **माल** = माला। **संकल्प** = दृढ़ निश्चय। **शूल** = काँटे।

●●